गुरु प्रार्थनाष्टक

1. परम पावन गुरु, तेरी हूं दावन गुरु
आवन जावन गुरु, मेरा ही मिटाइये।
हम हैं अजान गुरु, आप हो सुजान गुरु,
आतम का ज्ञान गुरु, मुझको सुनाइये॥
तरन तारन गुरु, करन कारन गुरु,
विघ्न टारन गुरु, बिगड़ी बनाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

2. परम दयाल गुरु, परम कृपाल गुरु,
परम उजाल गुरु, ज्योति को जगाइये।
सुन्दर सुचाल गुरु, नित ही निहाल गुरु,
अमर अकाल गुरु, यम से बचाइये॥
गोविन्द गोपाल गुरु, प्रभु प्रतिपाल गुरु,
राम रखपाल गुरु, बन्धन छुड़ाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

3. परम उदारी गुरु, परम भण्डारी गुरु,
परम आधारी गुरु, नाम को जपाइये।
पर दुःखी हारी गुरु, पर सुखकारी गुरु,
पर उपकारी गुरु, हरि से मिलाइये॥
नित अवतारी गुरु, शुभ गुणकारी गुरु,
कर रखवारी गुरु, ताप को जलाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

4. शाहन के शाह गुरु, सच्चा पातिशाह गुरु,
बिन परवाह गुरु, विपत्ति हटाइये।
बेवाहन वाह गुरु, बेराहन राह गुरु,
गुणन अथाह गुरु, मारग बताइये॥
दया के दर्याह गुरु, दोषन के दाह गुरु,
बख्श गुनाह गुरु, मोहि न भुलाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

5. राजन के राज गुरु, सन्त सिरताज गुरु,
महा महाराज गुरु, मोहि अपनाइये।
गरीब निवाज गुरु, राखो मेरी लाज गुरु,
पूरे कर काज गुरु, अज्ञान उड़ाइये॥
भव-जल पाज गुरु, सुखन समाज गुरु,
तारक जहाज गुरु, भव से तराइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

6. ब्रह्म के स्वरूप गुरु, आत्म अनूप गुरु,
अमल अरूप गुरु, द्वन्द्व को गलाइये।
अगम अगाध गुरु, अमर अबाध गुरु,
अचल अनाद गुरु, अभेद बनाइये॥
देवन के देव गुरु, अलख अभेव गुरु,
अटल अखेव गुरु, स्वरूप लखाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

7. पूरन सुज्ञानी गुरु, पूरन सुध्यानी गुरु,
पूरन सुदानी गुरु, प्रेम को पिलाइये।
शरण पालन गुरु, संकट घालक गुरु,
मेरे हो मालिक गुरु, दरस दिखाइये॥
करुणा निधान गुरु, सद् महरबान गुरु,
करले कल्यान गुरु, सुमति सिखाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

8. निओटन ओट गुरु, काटो भ्रम कोट गुरु,
मेटो यम चोट गुरु, पापन पलाइये।
वीरन के वीर गुरु, धीरन के धीर गुरु,
पीरन के पीर गुरु, शान्ति में समाइये॥
तुम धन धन गुरु, मैं हूं तेरा जन गुरु,
मारे मेरा मन गुरु, दोषन दलाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये॥

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

सद्गुरु टेऊँराम चालीसा

प्रथमे हरिहर ब्रह्म को, बार बार प्रणाम।
नर तन धर त्रिदेव जो, होया टेऊँराम ॥

तप्त धरा मरुदेश में, मेघ देत सन्देश।
त्यों जग के कल्याण हित, हरि धारै नर भेष॥

सिन्ध देश की महिमा भारी, बार बार ऋग्वेद उच्चारी
सिन्धु तीर पावन प्रसंगा, बहती जहां ज्ञान की गंगा
ऋषी मुनी अरु ज्ञानी ध्यानी, पढ़ते जहां ब्रह्म की बानी
धन्य सिन्ध की धरती सारी, धन्य सिन्ध के नर अरु नारी
समय बड़ा प्रबल प्रवीना, वेद पुराणनि वर्णन कीना
काल चक्र दुस्तर अति भारा, आ अधर्म ने पांव पसारा
धर्म कर्म भूले नर नारी, पाप कर्म में वृत्ती धारी
गीता में श्री कृष्ण सुनाया, जब जब भार भूमि पर आया
तब तब ही अवतार धरूं मैं, सत्य धर्म की विजय करूं मैं
प्रण पालन हित ले अवतारा, आए खण्डू नगर मंझारा
चेलाराम के आंगन माहीं, खुशी भई सब के मन माहीं
कृष्णा मां को दरश दिखाया, चतुर्भुजी निज रूप पसाया
शुक्ला तिथि षष्ठम आसाढ़े, प्रकट भए सब काज संवारे
शनिवार का दिवस सुहाना, शशिसम चमकत रूप जहाना
लोली दे दे मात लुडावे, गद् गद् गीत कण्ठ से गावे
बालक वय से हरिगुन माहीं, प्रीत लगी प्रभु सुमरन माहीं
विद्या हेतु जब उन्हें पठाया, सतगुरु आसूराम तहं पाया
गुरु बोले हो स्वयं सिद्ध तुम, परिपूर्ण हो ब्रह्म शुद्ध तुम
बैठ एकान्त में ध्यान लगाया, सहज समाधि के सुख को पाया

खान पान जग विषयों माहीं,
रंचक मन कहं लागत नाहीं
लगन लगी गुरु शब्द मंझारी,
टूटी मोह कोह की जारी
बालक गण को साथ बिठाये,
राम नाम की धुनी लगाए
इक दिन सिन्धू नदी किनारे,
बालक गए नहाने सारे
वस्त्र उतार तट पर रख दीन्हें,
टेऊँराम के सुपुर्द कीन्हें
बालक जल में खेलन लागे,
खिल्लू था उन सब में आगे
खेलत खेलत खिल्लू डूबा,
सबने देखा बड़ा अजूबा
वस्त्र सहित गुरु जल के माहीं,
कूदे लुप्त भए फिर ताहीं
बालक भय से रोअन लागे,
समाचार देवन कुछ भागे
शोकाकुल आये नर नारी,
चमत्कार देखा इक भारी
खिल्लू अपनी गोद उठाये,
सतगुरु जी तब बाहर आये
अद्भुत ऐसा देख निजारा,
विस्मित भया नगर तब सारा
खिल्लू कहा सुनो हे भाई,
डूब गया जब मैं जल माहीं
सुन्दर देव वहां दो आए,
पकड़ा मुझे,वरुण ढिग लाए
इतने में टेऊँराम पधारे,
तांको देख प्रसन्न भए सारे
अभिवादन वरुण तब कीन्हा,
निज सम्मुख ही आसन दीन्हा
कहन लगे कुछ सेवा बताएं,
बोले खिल्लू लेन हम आए
प्रसन्न हो तब दीन्ह विदाई,
सद्गुरु ने मम जान बचाई
धन्य धन्य गुरु टेऊँरामा,
परम पवित्र तुम्हरा नामा
जय हो हे गुरुदेव तुम्हारी,
सुख सागर तुम अति हितकारी
स्वर्ण आग संग मल ज्यों त्यागहिं,
लेवत नाम पाप त्यों भागहिं
तप्त बुझावत हैं चन्द ज्यों,
शीत हृदय करत नाम त्यों
इच्छित वस्तु कल्पतरु देवे,
नाम सुमरते सब फल सेवे
अब तो सत्संग की धुनि लागी,
मन की माया ममता त्यागी
डंडा झांझ लिया यकतारा,
बाजा तबला साज प्यारा
गली गली में धूम मचाई,
कृष्ण जैसे रास रचाई
प्रेम बढ़ा जब खण्डू माहीं,
गुरु सोचा यहाँ रहना नाहीं
नाम कीर्ती जय जयकारा,
इन बातों से सन्त न्यारा

यह विचार कर बिना बताए, जंगल में कुछ दिवस बिताए
आसन वहां जमाया स्थिर, हिंसक जन्तू का था ना डर
खोज खोज प्रेमी वहाँ आए, लौट चलें सबने समझाए
थिर आसन निश्चल मन ठाना, कहा अभी फिर लौट न जाना
घास फूस तृण कुटी बनाई, कन्द मूल खा जान सुखाई
गुरुमन्त्र का कर अभ्यासा, मेट दई जम की सब त्रासा
आतम अन्तर वृती लागी, जगत वासना सकली भागी
पावन भूमी वह जग माहीं, हरिजन करत तपस्या जाहीं
तिस भूमी की रज सिर लावत, गिरिजा को कह शंभु सुनावत
तीर्थ सम वह पूजन जोगी, जहं जहं नाम जपत है योगी
धन्य धन्य है सो अस्थाना, अमरापुर है उसका नामा
अमरापुर स्थान अमर है, दर्श करे सो फेर न मर है
चार धाम सम पवित्र धामा, अमरापुर है उसका नामा
तांकी महिमा कही न जाई, शेष शारदा पार न पाई
बैठ जहां गुरु ज्ञान सुनाया, सत्नाम साक्षी मंत्र जपाया
प्रेम प्रकाशी पंथ बनाया, सोए जीवों को था जगाया
जब तक गंग यमुन का पानी, तब तक अमर रहेगी कहानी
सूर्य चन्द्र प्रकाश हैं जौं लौं, नाम प्रकट जग में तव तौं लौं

अमर देश से आगमन, अमर देश प्रस्थान ।
अमरापुर वाणी अमर, अमरापुर स्थान ॥
आप अमर चरित्र अमर, अमर आपका नाम।
तव शरनागत भी अमर, धन गुरु टेऊँराम॥
साधु सन्त सब पूज्य हैं, सबको है प्रणाम ।
स्वासों में पर रम रहे, सत्गुरु टेऊँराम ॥
चालीसा गुरुदेव की, पढ़े सुने जन जोय।
श्रद्धा मन में जो धरे, मुक्ती पावे सोय॥

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

आरती

ॐ जय गुरु टेऊँराम, स्वामी जय गुरु टेऊँराम।।
पर उपकारी जगत उद्धारी, तुम हो पूरन काम।। ॐ ।।

जब जब प्रेमिनि निज हित कारण, तुमको पूकारा ।। स्वामी।।
तब तब गुरु अवतार धरे तुम, सबको निस्तारा ।। ॐ ।।

प्रेम प्रकाशी मण्डलाचार्य, मंत्र साक्षी सत्नाम।। स्वामी।।
धर्म सनातन के प्रचारक, नीति निपुण अभिराम ।। ॐ ।।

देश विदेश में मण्डली लेकर, पावन दे उपदेश।। स्वामी।।
आत्म रूप लखाया सबको, हरिया ताप क्लेश।। ॐ ।।

पूरण अचल समाधी तेरी, सिद्ध आसन ब्राजे।। स्वामी।।
रूप मनोहर सुन्दर लोचन, देखत मन गाजे।। ॐ ।।

आत्म स्थित वचन के पूरे, योगी इन्द्रिय जती।। स्वामी।।
परम उदारी धीरज धारी, परम अगाध मती।। ॐ ।।

धन धन मात पिता कुल तेरा, धन तव साधु सुजान।। स्वामी।।
धन वह देश जहाँ तुम जन्मिया, धन तव शुभ स्थान।। ॐ ।।

सुर नर मुनि जन हरिजन गुनिजन, गावत गुन तुम्हरे।। स्वामी।।
अंत न पाइ सके नर कोई, महिमा अपर परे।। ॐ ।।

जो जन तुम्हरी आरति गावे, पावे सो मुक्ती।। स्वामी।।
साध संगति को हरदम दीजे, पूरण गुरु भक्ती।। ॐ ।।